६. जनपद और महाजनपद

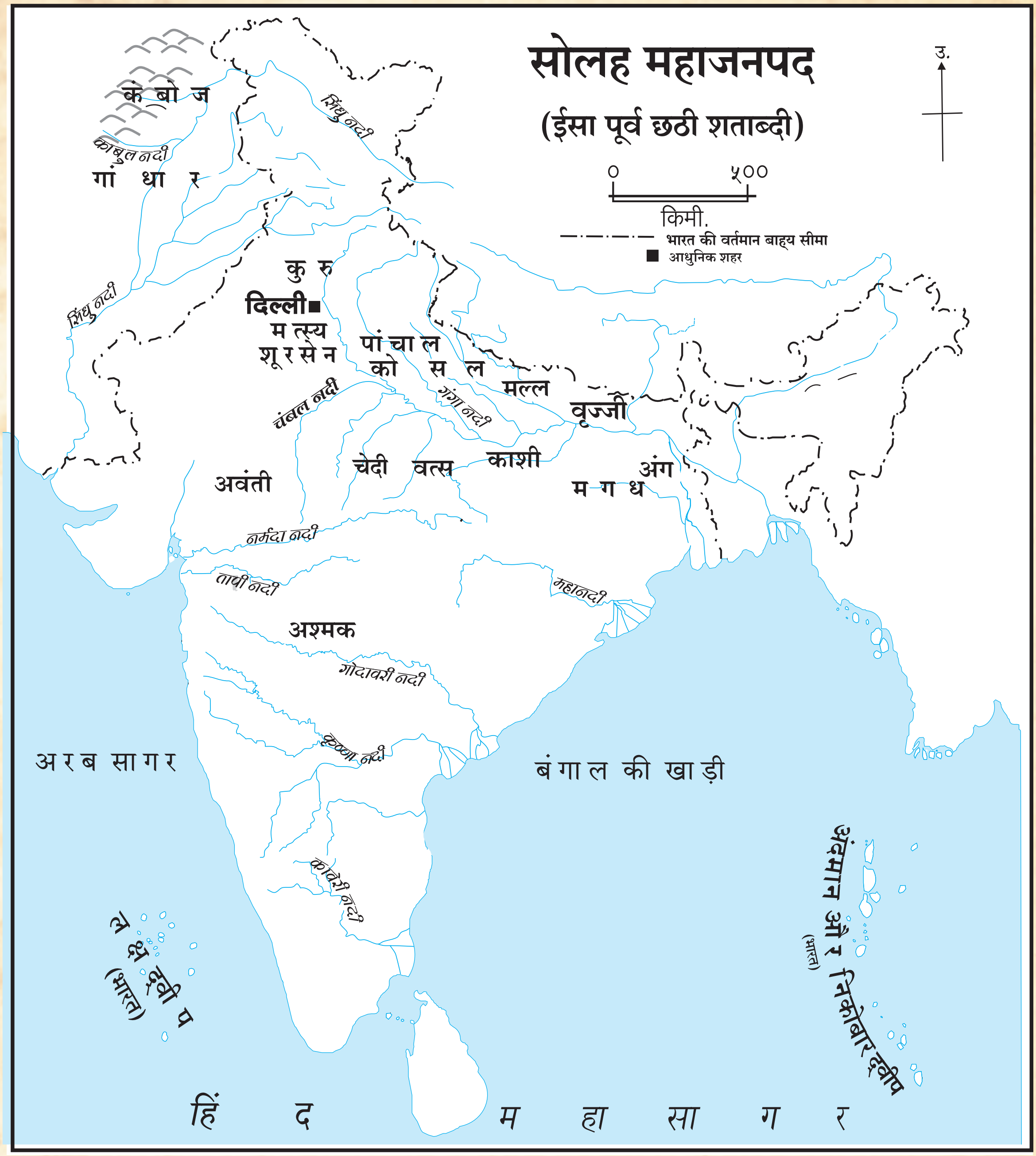

६.१ जनपद
६.२ महाजनपद
६.३ मगध साम्राज्य का उदय

करके देखो।

भारत के मानचित्र प्रारूप में सोलह महाजनपदों के नाम लिखो ।

६.१ जनपद

लगभग ईसा पूर्व १००० से ईसा पूर्व ६०० का कालखंड वैदिकोत्तर कालखंड माना जाता है । इस कालखंड में जनपदों का उदय हुआ । ये जनपद ही छोटे-छोटे राज्य थे । भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर में स्थित वर्तमान अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में बिहार, बंगाल, ओडिशा तक के प्रदेश में तथा दक्षिण में महाराष्ट्र तक ये जनपद फैले हुए थे । वर्तमान महाराष्ट्र का कुछ

क्षेत्र तत्कालीन 'अश्मक' नामक जनपद से व्याप्त था। संस्कृत, पाली और अर्धमागधी साहित्य में इन जनपदों के नाम पाए जाते हैं। यूनानी इतिहासकारों के लेखन द्‌वारा भी इनके विषय में जानकारी प्राप्त होती है। उनमें से कुछ जनपदों में राजतंत्र विद्‌यमान था। कुछ जनपदों में गणराज्य थे। जनपदों में अनुभवी व्यक्तियों की 'गणपरिषद' हुआ करती थी। गणपरिषद के पार्षद (सदस्य) एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श करके राज्य प्रशासन से संबंधित निर्णय लेते थे। इस प्रकार का विचार-विमर्श जहाँ होता था; उस सभागार को 'संथागार' कहते थे। गौतम बुद्‌ध शाक्य गणतांत्रिक राज्य से संबंधित थे। प्रत्येक जनपद के अपने-अपने सिक्के थे।

६.२ महाजनपद

महाजनपद

कोसल	वत्स	अवंती	मगध
• कोसल महाजनपद का विस्तार हिमालय की तलहटी में नेपाल और उत्तर प्रदेश में हुआ था। • इस राज्य के श्रावस्ती, कुशावती और साकेत नगर विख्यात थे। • श्रावस्ती कोसल महाजनपद की राजधानी थी। • गौतम बुद्‌ध ने श्रावस्ती के प्रसिद्‌ध विहार जेतवन में दीर्घ समय तक निवास किया था। • कोसल नरेश प्रसेनजित वर्धमान महावीर तथा गौतम बुद्‌ध का समकालीन था। • कोसल का राज्य मगध में विलीन हुआ।	• वत्स महाजनपद का विस्तार उत्तर प्रदेश के प्रयाग अर्थात इलाहाबाद के आस-पास के क्षेत्र में हुआ था। • कोसम अर्थात प्राचीन समय का कौशांबी नगर था। • यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। • कौशांबी के तीन अति धनवान व्यापारियों ने गौतम बुद्‌ध और उनके अनुयायियों के लिए तीन विहारों का निर्माण करवाया था। • कौशांबी नरेश उदयन गौतम बुद्‌ध का समकालीन था। • उदयन राजा के पश्चात वत्स महाजनपद का स्वतंत्र अस्तित्व बहुत समय तक बना नहीं रहा। इस महाजनपद को अवंती महाजनपद के राजा ने जीत लिया।	• मध्यप्रदेश के मालवा प्रदेश में अवंती प्राचीन महाजनपद था। • उज्जयिनी (उज्जैन) नगरी अवंती की राजधानी थी। • उज्जयिनी महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। • अवंती नरेश प्रद्‌योत वर्धमान महावीर तथा गौतम बुद्‌ध का समकालीन था। • अवंती नरेश नंदीवर्धन के कार्यकाल में अवंती महाजनपद मगध साम्राज्य में विलीन हुआ।	• बिहार में पटना, गया शहरों के आस-पास के क्षेत्र और बंगाल के कुछ क्षेत्र में प्राचीन मगध महाजनपद था। • राजगृह (राजगीर) मगध की राजधानी थी। • महागोविंद नामक वास्तुविशारद ने बिंबिसार के राजप्रासाद का निर्माण किया था। • बिंबिसार के दरबार में जीवक नामक प्रसिद्‌ध वैद्‌य था। • बिंबिसार ने गौतम बुद्‌ध का शिष्यत्व स्वीकारा था।

कुछ जनपद धीरे-धीरे अधिक बलशाली बन गए । उनकी भौगोलिक सीमाओं का विस्तार हुआ । ऐसे जनपदों को महाजनपद कहा जाने लगा । साहित्य में पाए गए उल्लेखों के आधार पर दिखाई देता है कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी तक महाजनपदों में सोलह महाजनपदों को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ था । उनमें भी विशेष रूप से कोसल, वत्स, अवंती और मगध महाजनपद अधिक सामर्थ्यशाली बनते गए ।

६.३ मगध साम्राज्य का उदय

बिंबिसार के बेटे अजातशत्रु ने मगध का विस्तार करने की नीति अपनाई । उसने पूर्व के अनेक गणराज्यों को जीत लिया । अजातशत्रु के कार्यकाल में मगध संपन्न हुआ । उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था । गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद अजातशत्रु के शासनकाल में राजगृह नामक स्थान पर बौद्ध धर्म की प्रथम संगिति अर्थात परिषद हुई ।

अजातशत्रु-शिल्प

अजातशत्रु के कार्यकाल में मगध की राजधानी के रूप में पाटलिग्राम की नींव रखी गई । यही पाटलिग्राम कालांतर में पाटलिपुत्र नाम से प्रख्यात हुआ । पाटलिपुत्र वर्तमान पटना शहर के परिसर में होना चाहिए ।

अजातशत्रु के पश्चात मगध के कई राजा हुए । उनमें शिशुनाग विख्यात राजा था । उसने अवंती, कोसल और वत्स राज्यों को मगध से जोड़ा । उत्तर भारत का लगभग संपूर्ण प्रदेश मगध के नियंत्रण में आ गया । इस प्रकार मगध साम्राज्य अस्तित्व में आया ।

मगध साम्राज्य के नंद राजा

ईसा पूर्व ३६४ से ३२४ के कालखंड में मगध साम्राज्य की गद्दी पर नंद राजा सत्तासीन थे । नंद राजाओं ने विशाल साम्राज्य के लिए जिस शासन व्यवस्था की आवश्यकता होती है; उस शासन व्यवस्था की स्थापना की । उनके पास थलसेना, अश्वसेना, रथसेना और गजसेना इस प्रकार चतुरंगिणी सेना थी । उन्होंने माप-तौल की प्रमाणित प्रणाली प्रारंभ की ।

नंद वंश का अंतिम राजा धनानंद था । उसके समय तक मगध साम्राज्य का विस्तार पश्चिम में पंजाब तक हुआ था । धनानंद के कार्यकाल में महत्त्वाकांक्षी युवक चंद्रगुप्त मौर्य ने पाटलिपुत्र को जीत लिया और नंद राजवंश का अंत करके मौर्य साम्राज्य की स्थापना की ।

अगले पाठ में हम मौर्य साम्राज्य के उदित कालखंड में उन विदेशी आक्रमणों की जानकारी प्राप्त करेंगे; जो भारत के पश्चिमी और पश्चिमोत्तर क्षेत्रों पर हुए थे । साथ ही मौर्य साम्राज्य की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

सोलह महाजनपदों के प्राचीन और आधुनिक नाम :

(१) काशी (बनारस) (२) कोसल (लखनऊ) (३) मल्ल (गोरखपुर) (४) वत्स (इलाहाबाद) (५) चेदि (कानपुर) (६) कुरु (दिल्ली) (७) पांचाल (रुहेलखंड) (८) मत्स्य (जयपुर) (९) शूरसेन (मथुरा) (१०) अश्मक (औरंगाबाद-महाराष्ट्र) (११) अवंती (उज्जैन) (१२) अंग-(चंपा-पूर्व बिहार) (१३) मगध (दक्षिण-बिहार) (१४) वृज्जी(वज्जी) (उत्तर बिहार) (१५) गांधार (पेशावर) (१६) कंबोज (गांधार के समीप)

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) जनपद किसे कहते हैं ?

(२) महाजनपद किसे कहते हैं ?

(३) बौद्‌ध धर्म की प्रथम परिषद कहाँ हुई ?

(४) माप-तौल की प्रमाणित प्रणाली किसने प्रारंभ की ?

२. बताओ तो :

(१) वर्तमान महाराष्ट्र का कुछ क्षेत्र तत्कालीन इस जनपद द्‌वारा व्याप्त था -

(२) जनपदों के वरिष्ठ और अनुभवी व्यक्तियों की होती थी -

(३) जिस सभागार में विचार-विमर्श होता था; उसे कहा जाता था -

(४) गौतम बुद्‌ध गणराज्य के थे -

(५) चतुरंगिणी सेना -

३. जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' समूह	'ब' समूह
(१) संगिति	(अ) अजातशत्रु
(२) धनानंद	(ब) परिषद
(३) पाटलिग्राम	(क) महागोविंद
	(ड) नंद राजा

४. भारत के विभिन्न संघ राज्य और उनकी राजधानियों की सूची बनाओ ।

उपक्रम :

(१) अपने परिसर के किले/गढ़ की सैर पर जाओ और निम्न मुद्दों के आधार पर जानकारी प्राप्त करो ।

(१) किले का प्रकार (२) किसके शासनकाल में निर्माण हुआ । (३) किला प्रमुख (४) प्रमुख विशेषता

(२) भारतीय सेना में कौन-कौन-सी सेनाओं का समावेश होता है ?

(३) निम्न तालिका पूर्ण करो ।

अ. क्र.	महाजनपद के राज्य	स्थान	राजधानी	प्रमुख राजा का नाम
१.	---	हिमालय की तलहटी में	---	---
२.	वत्स	---	---	---
३.	---	---	---	प्रद्‌योत
४.	---	पटना, गया शहरों के आस-पास का क्षेत्र	---	---

* * *

6Y66Z8